रजब के पहले दिन और रात की मख्सूस दुआ

1) हज़ूरे अकरम (स:अ:व:व) की सीरत थी की जब रजब का चाँद देखते थे तो यह दुआ पढ़ते थे: **Mp3** : firstdayamal71.mp3)

ऐ माबूद! रजब और शाबान में हम पर बरकत नाज़िल फ़रमा और हमें रमज़ान के महीने में दाख़िल फ़रमा और हमारी मदद कर, दिन के रोज़े, रात की क़याम	अल्लाहुम्मा बारक लना फ़ी रजबिन व बल'लग़ना शहरा रमज़ान व आ- श'अबान व इन्ना अलस-स्यामे वल क़याम व हिफ्ज़े	اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي رَجَبٍ وَ شَعْبَانَ وَ بَلِّغْنَا شَهْرَ رَمَضَانَ وَ أَعِنَّا عَلَىٰ الصِّيَامِ وَ الْقِيَامِ وَ حِفْظِ
ज़बान क़ो रोकने और निगाहें नीची रखने में और ईस महीने में हमारा हिस्सा महज़ भूक और प्यास क़रार न दे	अल-लेसान व ग़ज़'ज़ल बसरा वल-तज'अल मिन्हो अल-जू-ओ वल अतश हज़'ज़ना	اللِّسانِ وَ غَضِّ الْبَصَرِ وَ لَا تَجْعَلْ حَظَّنَا مِنْهُ الْجُوعَ وَ الْعَطَشَ

जब माहे रजब का चाँद देखते थे तो यह पढ़ते थे

ऐ माबूद! दुन्या चाँद हम पर अमन, इस्लाम के ईमान, सलामती और साथ तुलु'अ कर (ऐ चाँद) तेरा और मेरा रब वाला है वो अल्लाह है जो इज़्ज़त व जलाल	.बिसमिल्लाहिर रहमानिर रहीम अल्लाहुम्मा अहल-लहू अलैना बिल अम्ने वल इस्लामे रब्बी व इमाने व़स सलामत वल "रब्बोकल' लाहो अज़'ज़ा व जल'ला	اَللّٰهُمَّ أَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْأَمْنِ وَالْإِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْإِسْلَامِ رَبِّي وَرَبُّكَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ

अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मदीन व आले मोहम्मद, आमीन

2) रजब की पहली रात में ग़ुस्ल करें, जैसा की कुछ उल्माओं ने फ़रमाया है के रसूल (स:अ:व:व) का फ़रमान है की जो शख्स माहे रजब क़ो पाए और उस के अव्वल, औसत और आख़िर में ग़ुस्ल करे तो वो गुनाहों से ईस तरह पाक हो जाएगा, जैसे आज ही शिकमे मादर से निकला हो!

3) हज़रत ईमाम हुसैन (अ:स) की ज़्यारत करे / पढ़े

4) नमाज़े मगरिब के बाद 2-2 रक्'अत करके 20 रक्'अत नमाज़ पढ़े, जिसके हर रक्'अत में सुराः हम्द के साथ सुराः तौहीद की तिलावत करे तो वो खुद, इसके अहलो अयाल, और इसका माल माल महफूज़ रहेगा! और फिर अज़ाबे क़ब्र से बच जाएगा और पुले सेरात से बर्क रफ्तारी (तेज़ी से) निकल जाएगा

5) नमाज़े अशा के बाद 2 रक्'अत नमाज़ पढ़े जिसके पहली रक्'अत में सुराः हम्द के बाद 1 बार अलम-नशरह और 3 बार सुराः तौहीद और दूसरी रक्'अत में सुराः हम्द, सुराः अलम-नशरह, सुराः तौहीद, सूअरः फ़लक, सुराः नास पढ़े! नमाज़ का सलाम देने के बाद 30 मर्तबा ला इलाहा इलल लाह और 30 मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़े तो वो शख्स गुनाहों से ईस तरह पाक हो जाएगा जैसे आज ही शिकामे मादर से पैदा हुआ हो

6) 30 रक्'अत नमाज़ पढ़े जिसके हर रक्'अत में अल-हम्द के बाद 1 बार सुराः काफेरून और 3 बार सुराः इख्लास पढ़े

7) रजब की पहली रात के बारे में शेख़ में मिसबाहुल मुत्ताजिद में नक़ल किया है (यानी ज़िक्रे शबे अव्वल -रजब) की अबुल-तजरी वहब बिन वहब ने ईमाम जाफ़र अल-सादीक़ (अ:स) से, आप अपने वालिदे माजिद और इन्होंने अपने जददे अमजद अमीरुल मोमिनीन (अ:स) से रिवायत करते हैं की आप (अ:स) फ़रमाया करते थे : मुझे ख़ुशी महसूस होती है की इंसान पुरे साल के दौरान ईन चार रातों में खुद क़ो तमाम कामों से फारिग करके बेदार रहे और ख़ुदा की ईबादत करे, वो चार राते यह हैं : रजब की पहली रात, शबे नीमा शाबान, शबे ईद-उल-फ़ित्र, और शबे ईदे-क़ुर्बान! अबू जाफ़र सानी ईमाम मोहम्मद तक़ी अल-जवाद (अ:स) से रिवायत है की रजब की पहली रात में नमाज़े अशा के बाद ईस दुआ का पढ़ना मुस्तहब है!

ऐ! माबूद मै तुझ से माँगता हूँ के तू बादशाह है और बे शक तो हर चीज़ पर ईक़'तदार रखता है, और तू जो कुछ भी चाहता है वो हो जाता है	अल्लाहुम्मा इन्नी अस-अलोका बे-इन्नका मालिका व-इन्नका अला कुल्ले शै'ईन मुक़द'दिरो व इन्नका मा तशा-ओ मिन अमरिन यकूनो	اَللّٰهُمَّ إِنِّی أَسْأَلُک بِأَنَّکَ مَلِکٌ وَأَنَّکَ عَلَی شَیْءٍ مُقْتَدِرٌ وَأَنَّکَ مَا تَشاءُ مِنْ کُلِّ أَمْرٍیَکُونُ
ऐ माबूद! मै तेरे हुज़ूर आया हूँ तेरे नबी मोहम्मद के वास्ते जो नबीये रहमत हैं, ख़ुदा की रहमत हो ईनपर और ईन की आल (अ:स) पर या मोहम्मद, ऐ ख़ुदा के रसूल मै आपके	अल्लाहुम्मा इन्नी अता-वज'जहो इलैका बे-नबि'यका मोहम्मदीन नबिय्या-र रहमते सल'लल लाहो अलैहे व आलेही या मोहम्मादो या रसूल-अल्लाहे	أَتَوَجَّهُ إِلَیْکَ بِنَبِیِّکَ مُحَمَّدٍ نَبِیِّ اَللّٰهُمَّ إِنِّی عَلَیْهِ وَآلِهِ یَا مُحَمَّدُ یَا الرَّحْمَةِ صَلَّی اللّٰهُ رَسُولَ اللّٰهِ
वास्ते से ख़ुदा के हुज़ूर आया हूँ जो आपका और मेरा रब है ताकि आपकी ख़ातिर वो मेरी हाजत पूरी फ़रमाये! ऐ माबूद ब-वास्ता अपने नबी मोहम्मद (स:अ:व:व) और इनके अहलेबैत (अ:स)	इन्नी अता'वज-जहो बिका इलल लाहे रब'बका व रब'बेया ले युन-हीहा ली बेका तले-बती, अल्लाहुम्मा बे नबी'यका मोहम्मदीन	إِلَی اللّٰهِ رَبِّکَ وَرَبِّی إِنِّی أَتَوَجَّهُ بِکَ بِنَبِیِّکَ مُحَمَّدٍ لِیُنْجِحَ لِی بِکَ طَلِبَتِی اَللّٰهُمَّ
में से अ-ईम्मा (अ:स) के, आँ'हज़रत पर और ईन सब की आल पर ख़ुदा की रहमत हो, मेरी हाजत पूरी फ़रमा दे	वल अ-इम्मते मिन अहलेबैतेही सल-लल लाहो अलैहे व अलैहुम अन-हीहो तले-बती	وَالْأَئِمَّةِ مِنْ أَهْلِ بَیْتِهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَعَلَیْهِمْ أَ نْجِحْ طَلِبَتِی

इसके बाद अपनी हाजतें तलब करे! अली इब्ने हदीद ने रिवायत की है की हज़रत ईमाम मूसा अल-काज़िम (अ:स) नमाज़े तहज्जुद से फारिग़ होने के बाद सजदे में जाकर यह दुआ पढ़ते थे !

हम्द तेरे ही लिये है अगर मै तेरी अता'अत करूँ और अगर में तेरी ना फ़रमानी करूँ तेरे लिये मुझ पर हक़ है, तो न मै नेकी कर सकता हूँ	लकल मोहम्म'द्तो ईन ईन अत-अतोका, व लकल हुज्जतो ईन असा'यतोका, ला सुन'आ ली वला ले'गैरी फ़ी एह्साने	أَطَعْتُکَ، وَلَکَ الْحُجَّةُ إنْ لَکَ الْمَحْمَدَةُ إنْ فِی عَصَيْتُکَ، لاَ صُنْعَ لِی وَلاَ لِغَيْرِی إحْسانٍ
न कोई और नेकी कर सकता है, सिवाए तेरे वसीले के ऐ वो की जो हर चीज़ से पहले मौजूद था और तुने हर चीज़ क़ो पैदा फ़रमाया है बेशक तू हर चीज़ पर	इल्ला बका, या का'येना क़बला कुल्ला शै'ईन, व या मोकाव'वना कुल्ला शै'ईन, इन्नका अला कुल्ले शै'ईन क़दीर, अल्लाहुम्मा इन्नी	إلاَّ بِکَ، يَا کائِناً قَبْلَ کُلِّ شَیْءٍ، وَيَا مُکَوِّنَ کُلِّ شَیْءٍ، إنَّکَ عَلَی کُلِّ شَیْءٍ قَدِيرٌ۔اَللّٰهُمَّ إنِّی
क़ुदरत रखता है ,ऐ माबूद !मै तेरी पनाह लेता हूँ मौत के वक़्त हक़ से फिर जाने से और क़ब्र में जाने पर होने वाले अज़ाब	अ'ऊज़ो बेका मेनल'अदीलते इंदल मौते व मिन शर'रल मर'जा'अ फ़िल'क़बूर व मिनन'नेदामते यौमल नाज़'फ़ते	الْعَدِيلَةِ عِنْدَ الْمَوْتِ، وَمِنْ أَعُوذُ بِکَ مِنَ النَّدامَةِ يَوْمَ شَرِّ الْمَرْجِعِ فِی الْقُبُورِ، وَمِنَ الْآزِفَةِ
से और क़यामत की दिन शर्मिंदगी से तेरी पनाह लेता हूँ बस सवाल करता हूँ तुझ से के मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़िल फ़रमा और यह के मेरी	फ़'अस'अलोका अनतो सल्ले अला मोहम्मदीन व आले मोहम्मदीन व अन तज'अल ऐ-शी इ-शतन नक़ी'यतो व मी'तती मी'ततो सवाई'यतो	تُصَلِّیَ عَلَی مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ فَأَسْأَلُکَ أَنْ نَقِيَّةً وَمِيْتَتِی وَأَنْ تَجْعَلَ عَيْشِی عِيشَةً مِيتَةً سَوِيَّةً
ज़िंदगी क़ो पाक ज़िंदगी और मौत क़ो इज़्ज़त की मौत क़रार दे और मेरी बाज़-गुज़श्त क़ो आब्रो-मंद बना दे के जिस में ज़िल्लत व रुसवाई न हो, ऐ माबूद! मोहम्मद और इनकी	व मून'क़ल्बी मून'क़ल'बन करीमन गैरा मुख़'ज़े वला फ़ा'ज़ेह, अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मदीन व आलेही अल-अ'इम्मते य'नाबीहिल हिकमते	کَرِيماً غَيْرَ مُخْزٍ وَلاَ وَمُنْقَلَبِی مُنْقَلَباً الْأَئِمَّةِ فاضِحٍ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَی مُحَمَّدٍ وَآلِهِ يَنابِيعِ الْحِکْمَةِ،
आल (अ:स) में अ'ईम्मा (अ:स) पर रहमत	व अव्वेली-ईल न'अ-मते व म-आदिनिल इस्मते	وَمَعادِنِ الْعِصْمَةِ، وَأُوْلِی النِّعْمَةِ،

फ़रमा जो हिकमत के चश्मे, साहिबाने नेमत और पाकबाज़ी की काने हैं इनके वास्ते से मुझे हर बुराई से महफूज़ फ़रमा, बेख़बरी में	व अ-सिमनी बहुम मिन कुल्ले सू'ईन व ला ता'अखुज़्नी अला ग़िर'रतीन वला	وَاعْصِمْنِى بِهِمْ مِنْ كُلِّ سُوءٍ، وَلاَ تَأْخُذْنِى عَلَى غِرَّةٍ وَلاَ
अचानक और गफलत में मेरी गिरफ़्त न कर, मेरे अमाल का अंजाम हसरत पर न कर और मुझ से राज़ी हो जा की यक़ीनन तेरी बख्शीश जालिमों के लिये है और मै	अला गफ़'लातीन व ला तज'अल आ-वा'क़ीबा अमाली हसरता, व अर्ज़ा अन्ना, फ़'इन्ना मग़'फ़ेरतेका लील-ज़ालेमीना व अना मेनल	تَجْعَلْ عَواقِبَ أَعْمالِى عَلَى غَفْلَةٍ،وَلاَ حَسْرَةً، وَارْضَ عَنِّى، فَإِنَّ مَغْفِرَتَكَ لِلظَّالِمِينَ وَأَنَا مِنَ
जालिमों से हूँ, ऐ माबूद! मुझे बख्श दे जिस का तुझे ज़रर नहीं और अता कर दे जिसका तुझे नुक़सान नहीं क्योंकि तेरी रहमत वसी'अ	ज़ालेमीना अल्लाहुम्मा अग़'फ़िर्ली माला यज़ुर'रोका व अ'तेनी ला यन'क़ो-सोका फ़'इन्नाकल वसियो रहमतुल बदी'यो	اغْفِرْ لِى مَا لاَ يَضُرُّكَ الظَّالِمِينَ اَللّٰهُمَّ الْوَسِيعُ وَأَعْطِنِى مَا لاَ يَنْقُصُكَ فَإِنَّكَ رَحْمَتُهُ الْبَدِيعُ
और हिकमत अजीब है और मुझे अता फ़रमा वुस'अत व असा'इश, अमन व तंदुरुस्ती, आज्ज़ी व क़ना'अत, शुक्र और माफ़ी, सब्र व परहेज़गारी, और तू मुझे अपनी ज़ात और अपने औलिया से मूत'अल्लिक़ सच	हिक्मतोहू व अ'तेनी सा'अत वद'दा'अत वल अमना व़स-सह'अता वल नजू-अ वल क़नू'अ व़स-शुक्रा वल-मोआ'फ़ाता वत'तक़वा	السَّعَةَ وَالدَّعَةَ وَالْاَمْنَ حِكْمَتُهُ وَأَعْطِنِى وَالشُّكْرَ وَالصِّحَّةَ وَالْجُودَ وَالْقُنُوعَ وَالْمُعافاةَ وَالتَّقْوى
बोलने क़ो तौफीक़ दे और आसूदगी व शुक्र अता फ़रमा और ऐ पालने वाले ईन चीज़ों क़ो आम फ़रमा, मेरे रिश्तेदारों, मेरी औलाद, मेरे दीनी भाइयों के लिये और जिस से	व़स-सबरा व़स सिद्क़ा अलीका व अला औलिया'एका वल-यसरा व़स-शुक्रा व अ-अ-मीम बिज़'लेका या रब'बा अहली व-वलादी	عَلَيْكَ وَعَلَى أَوْلِيائِكَ وَالصَّبْرَ وَالصِّدْقَ رَبِّ وَالْيُسْرَ وَالشُّكْرَ، وَأَعْمِمْ بِذلِكَ يَا أَهْلِى وَوَلَدِى

मै मोहब्बत करता हूँ और जो मुझ से मुहब्बत करता है और जो मेरी औलाद हों और तमाम मुसलामानों और मोमिनीन के लिये, ऐ आलमीन के परवरदिगार	व इख़'वानी फ़ीका व मन अह्बब्तो व अहिब'बनी व वलादतो व वलादनी मिनल मुस्लेमीना वल मोमेनीना या रब्बुल आलमीन	وَ إِخْوانِی فِیکَ وَمَنْ أَحْبَبْتُ وَأَحَبَّنِی وَوَلَدْتُ وَوَلَدَنِی مِنَ الْمُسْلِمِینَ وَالْمُؤْمِنِینَ یَا رَبَّ الْعالَمِینَ

इब्ने अशीम का कहना है की नीचे लिखी हुई दुआ नमाज़े तहज्जुद की 8 रक्'अत के बाद पढ़े, फिर दो रक्'अत नमाज़े शफ़ा'अ और एक रक्'अत नमाज़े वित्र अदा करे और सलाम के बाद बैठे बैठे यह दुआ पढ़े!

हम्द है ईस ख़ुदा के लिये जिसके खजाने खत्म नहीं होते और जिसे वो अमान दे इसे खौफ़ नहीं ,मेरे परवरदिगार अगर मैने ना-फर्मानियाँ की	अलहम्दो लील'लाहिल लज़ी ला तन'फ़दो ख़ज़ा'एनाहू व ला यख़ाफ़ो आ'मेनोहू रब'बा ईन अर'तकब्तोल म-आसी फ़'ज़लेका सिक्क़त	لاَ تَنْفَدُ خَزائِنُهُ وَلاَ یَخافُ الْحَمْدُ لِلّهِ الَّذِی فَذٰلِکَ ثِقَةٌ آمِنُهُ، رَبِّ إِنِ ارْتَکَبْتُ الْمَعاصِیَ
हैं तो ईस वास्ते के मुझे तेरे करम पर भरोसा था क्योंकि तू अपने बन्दों की तवज्जह क़बूल फ़रमाता है इनकी बुराइयों से दर गुज़र करता और खताएं माफ़ करता है तो	मिन्नी बे कर्मेका इन्नका ताक़ब'बलों तौ'बता अन-एबादेका, व त'अफ़ू अन सेया'तेहीम व तग़'फ़ेरो ज़ल'लतू इन्नका	تَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ مِنِّی بِکَرَمِکَ، إِنَّکَ الزَّلَّلَوَ عِبادِکَ، وَتَعْفُو عَنْ سَیِّئاتِهِمْ وَتَغْفِرُ إِنَّکَ
पुकारने वाले का जवाब देता है और तू इससे क़रीब होता है और मै तेरे हुज़ूर अपने गुनाहों से तौबा कर रहा हूँ और तुझ से तेरी अताओं में अपने	मोजीबो ले'दा'ईका व मिन्हो क़रीबो व अना ता'इबो इलय्का मिनल ख़ताया व राग़ेबो इलय्का फ़ी तौफ़ीर हज़'ज़ी	مُجِیبٌ لِدَاعِیکَ وَمِنْهُ قَرِیبٌ وَأَ نَا تائِبٌ إِلَیْکَ مِنَ الْخَطایا وَراغِبٌ إِلَیْکَ فِی تَوْفِیرِ حَظِّی

हिस्से में फरावानी चाहता हूँ ,ऐ मख्लूक़ के पैदा करने वाले ,ऐ मुझे हर मुश्किल से निकालने वाले ,ऐ मुझ क़ो हर बदी से बचाने वाले मुझ पर	मिनल अताया, या ख़ालेक़ल बराया, या मूनक़ेज़ी मिन कुल्ले शादी-दतिन या मोजीरी मिन कुल्ले मह'ज़ूरे वफ़'फ़र अलैय्या	مِنَ الْعَطايا، يَا خالِقَ الْبَرايا، يَا مُنْقِذِى مِنْ كُلِّ شَدِيدَةٍ، يَامُجِيرِى مِنْ كُلِّ مَحْذُورٍ، وَفِّرْ عَلَىَّ
मुसर्रत की फ़रावानी फ़रमा ,मुझे सब मामलों के बुरे अंजाम से महफ़ूज़ रख ,की तुही वो ख़ुदा है की कसीर नेमतों और अताओं पर जिसका शुक्र किया जाता है	सरूरा, व इक'फ़ेनी शर'रा आ'वा'क़ेबेल अमूर. फ़'अन्ता अल'लाहो अला ने'मायेका व जज़ीला अता'एका मश्कूरो	السُّرُورَ، وَاكْفِنِى شَرَّ عَواقِبِ الأُمُورِ، فَأَنْتَ اللهُ عَلَى نَعْمائِكَ وَجَزِيلِ عَطائِكَ مَشْكُورٌ،
और हर भलाई तेरे यहाँ ज़खीरा है	व ले कुल्ले खैरे मद'ख़ुरो	وَ لِكُلِّ خَيْرٍ مَذْخُورٌ .

याद रहे की उल्माए कराम ने रजब की हर रात के लिये एक मख्सूस नमाज़ ज़िक्र फ़रमाई है, लेकिन ईस मुख़्तसर जगह पर इनके ब्यान की गुंजाईश नही है!

पहली रजब का दिन

यह बड़ी अज़्मत वाला दिन है और इसमें चंद एक अमाल हैं :

1) रोज़ा रखना, रिवायत है की हज़रत नूह (अ:स) इसी दिन किश्ती पर सवार हुए और आप (स:अ) ने अपने साथियों क़ो रोज़ा रखने का हुक्म दिया!, बस जो शख्स ईस दिन का रोज़ा रखे तो जहन्नम की आग इससे एक साल की मुसाफत पर रहेगी!

2) ईस रोज़ ग़ुस्ल करे

3) हज़रत ईमाम हुसैन (अ:स) की ज़्यारत करे/पढ़े, जैसा की शेख़ ने बशीर द'हान से और इन्होने ईमाम जाफ़र अल-सादीक़ (अ:स) से रिवायत की है, फ़रमाया : पहली रजब के दिन ईमाम हुसैन (अ:स) की ज़्यारत करने वाले क़ो खुदाए त'आला ज़रूर बख्श देगा!

4) वो तवील दुआ पढ़े, जो सैय्यद ने किताब में नक़ल की है!

5) नमाज़े हज़रत सुलेमान पढ़े जो 10 रक्'अत है, 2-2 रक्'अत करके पढ़े के जिसके हर रक्'अत में सुराः हम्द के बाद 3 मर्तबा सुराः तौहीद और 3 मर्तबा सुराः काफेरून की तिलावत करे, नमाज़ का सलाम देने के बाद हाथों क़ो बुलंद करके कहे :

अल्लाह की सिवा और कोई माबूद नहीं, जो यगाना है, इसका कोई सानी नहीं, हुकूमत इसकी और हम्द इसकी है वो ज़िंदा करता और मौत देता है, वो ऐसा ज़िंदा है जिसे मौत नैन, भलाई इसके पास है और वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है	ला इलाहा इलल'लाह वह'दहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्को व लहुल हम्दो युह'यी व योंमीतो व हुवा ला यमूतो बैदेहिल खैरो व हुवा अला कुल्ले शै'ईन क़दीर	لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ وَحْدَہ لَا شَرِیْکَ لَہُ لَہُ الْمُلْکُ وَ لَہُ الْحَمْدُ یُحْیِیْ وَ یُمِیْتُ وَھُوَ حَیٌّ لَا یَموتُ بِیَدِہِ الْخَیْرُ وَ ھُوَ عَلٰی کُلِّ شیءٍ قَدِیرٌ

फिर कहे :

ऐ माबूद! जो कुछ तू दे इसे कोई रोकने वाला नहीं और जो कुछ तो रोके उसे कोई दे नहीं सकता और नफ़ा नहीं देता किसी का बख्त सिवाए तेरे दी हुई ख़ुश'बख्ती के	अल्लाहुम्मा ल माने'अ लेमा अतो'यता वला मोतेयी लेमा मोने'अत वला युन'फ़'ओ ज़ुल'जद'दा मिन्कल जद'दा	اَللّٰھُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعطَیْتَ وَلَا مُعْطِیْ لِمَا مُنِعَتْ وَ لَا یُنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْکَ الْجَدِّ

इसके बाद हाथों क़ो मुंह पर फेर ले - 15 रजब के दिन भी यही नमाज़ बजा लाये, लेकिन ईस दुआ के बदले में "**अला कुल्ले शै'ईन क़दीर**" के बाद यह कहे :

वो माबूद यगाना, यकता, तन्हा और बे	इलाहन वाहेदन अहादन फ़र्दन समदन, लम	اِلٰھاً وَّاحداً اَحَدًا فَرْدًا صَمَدًا لَّمْ یَتَّخِذْ

नेयाज़ है, न इसकी कोई ज़ौजा है न इसकी कोई औलाद है!	यत्ता'खिज़ साहेबतन वला वलादन	صَاحِبَةً وَّ لَا وَلَدًا

और फिर रजब के आखरी दिन में भी यही नमाज़ अदा करे लेकिन "**अला कुल्ले शै'ईन क़दीर**" के बाद यह कहे :

और ख़ुदा की रहमत हो हज़रत मोहम्मद (स:अ:अ:व:व) और इनकी पाकीज़ा आल (अ:स) पर और नहीं कोई ताक़त व क़ुव्वत मगर वो जो बुलंद व बुज़ुर्ग ख़ुदा से है	व सल'लल'लाहो आला मोहम्मदीन व आलेही'त ताहेरीन व ला होवला क़ुव्वाता इल्ला बिल्लाहिल अलियुल अज़ीम	وَصَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ الطَّاهِرِيْنَ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّابِااللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ۔

फिर अपने हाथों क़ो मुंह पर फेरे और अपनी हाजत तलब करे, ईस नमाज़ के फ़ायेदे और बरकात बहुत ज़्यादा हैं, बस इससे गफलत न बरती जाए. वाज़े हो की पहली रजब के दिन में हज़रत सुलेमान की एक और नमाज़ भी मनकूल है जो 10 रक्'अत है, 2-2 रक्'अत करके पढ़ी जाती है, इसकी हर रक्'अत में सुराः हम्द के बाद सुराः तौहीद पढ़े - ईस नमाज़ की भी बहुत सारी फ़ज़ीलतें हैं, जीने सबसे कमतर फ़ज़ीलत यह है की जो शख्स यह नमाज़ बजा लाये इसके गुनाह बख्श दिए जायेंगे, वो बरस, जेजाम और निमोनिया से महफूज़ रहेगा और अज़ाबे क़ब्र और क़यामत की सख्तियों से बचा रहेगा! सैय्यद (अ:र) ने भी ईस दिन के लिये 4 रक्'अत नमाज़ नक़ल की है! बस वो नमाज़ अदा करने की ख़्वाहिश रखने वाले इनकी किताब "इक़बाल" की तरफ़ रुजू करें! ईस कौल के मुताबिक़ 57 हिजरी में ईस रोज़ ईमाम मोहम्मद बाक़र (अ:स) की विलादत ब-स'आदत हुई, लेकिन मो'अल्लिफ़ का ख़्याल है की आप की विलादत 3 सफ़र क़ो हुई है! इसी तरह एक कौल है की 2 रजब 212 हिजरी में ईमाम अली नक़ी (अ:स) की विलादत और 3 रजब 254हिजरी में आप की शहादत सामरा में हुई! फिर इब्ने अयाश के ब'कौल 10 रजब ईमाम मोहम्मद तक़ी (अ:स) की विलादत का दिन है!